मेरा पन्ना

चकमक में छपी बच्चों की कविताओं व चित्रों का संकलन

मेरा खच्चर डण्डा है

एकलव्य

श्री हरी
नमस्ते
आयु 15 वर्ष कक्षा 10 वी
योगेन्द्र कुमार पाण्डेय
* चुटकुले एवं पहेलियाँ
एक बाप, पचास बेटा, क्या है-
उत्तर- माचिस
BOOK-POST
प्रेषक-
संतोष कुमार सोनी

मेरा पन्ना

चकमक में छपी बच्चों की कविताओं व चित्रों का संकलन

मेरा खच्चर डण्डा है

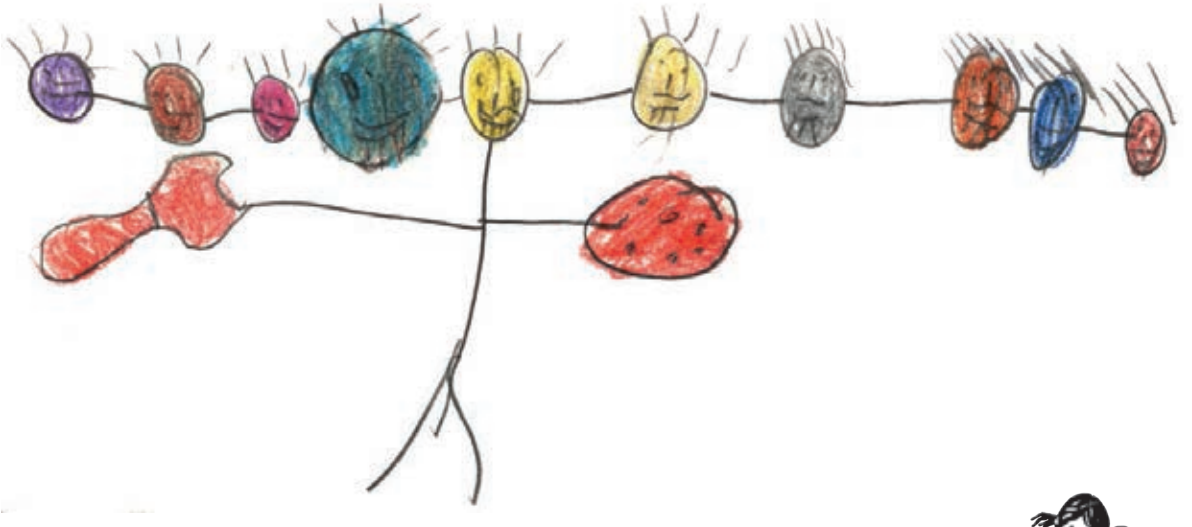

चित्र: आरव, पहली, भोपाल, मध्य प्रदेश, अक्टूबर 2015

एकलव्य

भूमिका

चकमक में बच्चों के लिए विज्ञान, कला और साहित्य के साथ-साथ जीवन के तमाम पहलुओं पर सामग्री प्रकाशित होती है। 1985 से प्रकाशित हो रही इस पत्रिका में हम केवल बच्चों के लिए ही नहीं, बल्कि बच्चों द्वारा तैयार की गई सामग्री भी शामिल करते आ रहे हैं। बच्चों के विचारों, उनकी कल्पनाशीलता और रचनाओं के लिए निश्चित तौर पर और नियमित रूप से जगह रहे, इसी इरादे से 'मेरा पन्ना' कॉलम दूसरे अंक से शुरू किया गया था। यह कॉलम आज भी चकमक में प्रकाशित होता है।

जब हम चकमक के 400वें अंक की तैयारी करने लगे तो लाज़िमी था कि हम पीछे मुड़कर इस लम्बे सफर पर गौर करते। पुराने अंकों को पलटते। ऐसा करते समय हमें एहसास हुआ कि हमारे पास एक खज़ाना है, बच्चों की रचनाओं का। पिछले 34 सालों से बच्चे लगातार हमें लिखते आ रहे हैं। ऐसा न हो कि उनकी रचनाएँ सिर्फ पत्रिका के पन्नों के बीच सिमटकर रह जाएँ, सो हमने 'मेरा पन्ना' की रचनाओं से एक किताब बनाने के बारे में सोचा। हमें इतनी मज़ेदार रचनाएँ मिलीं कि हमने एक नहीं, दो किताबें बना डालीं– *तीस की मुर्गी बीस में*, जो 'मेरा पन्ना' में प्रकाशित कहानियों-किस्सों का संकलन है और *मेरा खच्चर डण्डा है*, जो कविताओं का संकलन है। दोनों किताबों में हमने बच्चों के बनाए चित्र भी शामिल किए हैं। इनमें से कुछ चकमक में प्रकाशित हो चुके हैं और कुछ अप्रकाशित हैं।

इन किताबों के लिए रचनाओं को छाँटते समय हमने वही मापदण्ड इस्तेमाल किए, जो हम बड़ों की रचनाओं का चयन करते समय इस्तेमाल करते हैं। साथ ही हमने किन्हीं खास विषयों को नहीं चुना, और ना ही हमने सबसे 'अच्छी' रचना या चित्र को चुना। बच्चों की सृजनात्मकता, उनके दिमाग में दौड़ती हुई काल्पनिक व वास्तविक, विविध बातों को हमने यहाँ दिखाने की कोशिश की है। इन रचनाओं को पढ़ेंगे तो आप पाएँगे कि यह रचनाएँ बच्चों के 'सुकोमल' व 'नासमझ' होने की छवि को पुख्ता तौर पर खारिज करती

हैं। बच्चे भी अपने आसपास के जीवन (व दूरदराज़ के भी) की छोटी-बड़ी घटनाओं पर उतनी ही गम्भीरता से विचार करते हैं/सवाल रखते हैं, जितना कि बड़े।

'मेरा पन्ना' की इन किताबों के साथ ही हमने एक और किताब बनाई है– *भूलभुलैया*। ये पहेलियों की किताब है। 'माथापच्ची' चकमक के उस कॉलम का नाम है जो पहले अंक से आज तक प्रकाशित होता आ रहा है। इसमें वास्तविक जीवन से जुड़ी अलग-अलग तरह की पहेलियाँ होती हैं। कुछ पहेलियाँ गणितीय होती हैं, तो कुछ शब्द-पहेलियाँ होती हैं। कभी-कभी जवाब चित्रों में ढूँढ़ना होता है, तो कभी सुरागों के ज़रिए एक निष्कर्ष पर पहुँचना होता है। इनके अलावा चकमक में हमने चित्रपहेली, भूलभुलैया, अन्तर ढूँढ़ो, सुडोकू, छुपनछुपाई, गलतियाँ ढूँढ़ो जैसी मज़ेदार चीज़ें भी दी हैं। बच्चों ने इनको बहुत पसन्द किया है। पहेलियों की इस किताब में भी ये सारी चीज़ें हैं। इस किताब की सज्जा भी हमने बच्चों के चित्रों से ही की है।

इस तरह हमने चकमक के अंकों से तीन किताबें तैयार की हैं।

हम उन सभी के आभारी हैं जिनका काम हमने इन किताबों में इस्तेमाल किया है। हर रचना, चाहे गद्य, कविता या चित्र हो, के साथ हमने यह भी बताया है कि वह किस अंक में प्रकाशित हुई थी। पिछले कुछ सालों में छपी सामग्री को छोड़कर हमारे पास सभी बाल रचनाकारों का पता नहीं है। कुछ रचनाएँ चकमक में बीस साल से भी पहले छपी थीं और इनके रचनाकार अब बड़े भी हो गए होंगे। कुछ रचनाकारों के बारे में हमारे पास पूरी जानकारी नहीं है, कहीं बच्चे का नाम नहीं है तो कहीं उम्र या पता नहीं है। इसलिए अगर आपको अपनी रचना इन किताबों में मिलती है, तो हमसे ज़रूर सम्पर्क करें।

विनता विश्वनाथन
chakmak@eklavya.in
+91 9753011077

क्या कहाँ है...

कविता

कढ़ी पत्ता	6
ओ नन्हे बीज	7
कितने सारे रंग	8
पानी	11
फुर्र-फुर्र	12
किनारा	15
गीत	16
ईद	19
राजा तू कैसा?	20
स्कूल	22
भट्टा	24
रंगों की सौगात	27
रानी का छाता	28
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई	29
बात है बहुत पुरानी	30
मछली रानी	31
मन में भय	32
नीम का पेड़	34
आखिर क्यों	36
आज सुबह की ठण्डी है	37
खत्म	38
खिड़की से बाहर	40
मेरी बस का नम्बर	41
गाँव के बच्चे	42
जब बच्चों ने देखा चूहा	43
मेरा सपना	44
मौत को बुलावा	45
मैं भूला	46
बूँदों की कहानी	48
चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा	51
मेरे बाबा	52
साइकिल	53
गणित	55
आसमान में चिड़िया	56
छत्तीसगढ़ी कविता	58
डॉक्टर दादी	61
कौन जानवर?	62
बिल्ली रानी	65
इधर मत खसको	66
मेरा खच्चर डण्डा है	68
राजा का सोफा	70
दादा, दाल बाटी दे	72
तस्वीर	75
फर-फर	76
मैं कैसा बच्चा हूँ?	78

क्या कहाँ हैं...

चित्र

आरव	1	अमन वर्मा	42
साहिल	6	माहिल	43
आराध्या	7	सपना तिवारी	44
नबीन	8	अक्षर	45
श्रेयांश जैन	10	अनुष्का	46
सुहानी श्रीवास्तव	12	आशु काकड़े	48
चिन्मयी भट्टाचार्य	14	आशना ए बल्लभ	50
अमिषा	16	सार्थक नायर	52
समीर	18	ओसामा खुर्शीद	53
माहिल	20	नियति सोनी	54
प्रेम गोखे	20	राजेन्द्र गुर्जर	56
रिया	21	रोशनी व्याम	57
बलराम	22	पंकज चौरे	58
निकुंज गुप्ता	22	शिवी देवी	60
रिशी देसाई	23	मगनलाल जोड	61
नीलेश	24	स्मित कबीर	62
चन्द्रिका	25	अजय सैनी	63
शिवानी लालगे	26	जोहर ठाकुर	64
नेहा भट्ट	28	शिवरंजनीपुरी	65
अलफाज़ फारुक काझी	30	मोना	66
संस्कृति ननावरे	31	सुषमा अहिरवार	68
मेहा पाठक शर्मा	32	कमल	69
देव	34	नीलूपमा	70
सन्दीप भार्गव	36	टुटु	72
अख्तर हुसैन	37	दमयन्ती	73
जीवन	38	द येलो ट्रेन स्कूल के विद्यार्थी	74
तुका	40	अनाम	76
आमिर	41	स्नेहा	79

चित्र: साहिल
द मोटिवेशन - अ लर्निंग सेंटर
नोएडा, उत्तर प्रदेश
मई 2019

कढ़ी पत्ता

प्रज्ञा
दिल्ली
सितम्बर-नवम्बर 2011

कढ़ी पत्ते का पेड़ कहता है
कि मैं बड़ा अच्छा हूँ
कढ़ी पत्ते के कान में
चिड़िया कहती है कि
तुम बहुत अच्छे हो
मैं भी बहुत अच्छी हूँ
और जब मैं तुम पर
बैठती हूँ, झूलती हूँ,
मुझे गुदगुदी होती है।

ओ नन्हे बीज

अक्षत चमोली
तीसरी, जोशीयाड़ा
उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड
जून 2012

ओ नन्हे बीज
तुझ में छिपा है
एक बड़ा-सा पेड़
खूब सुन्दर फूल
मीठे-मीठे फल
हरी-हरी पत्तियाँ
चिड़ियों के लिए घर
मज़बूत-मज़बूत लकड़ियाँ
आ, मैं तुझे बो दूँ।

चित्र: आराध्या कपूर, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, लुधियाना, पंजाब, अगस्त 2014

कितने सारे रंग

राम घणी
बारह वर्ष, जगनपुरा
सवाई माधोपुर, राजस्थान
मई 2014

पेड़ आया
इतने सारे रंग लाया
इतने अच्छे रंग खिल रहे हैं
फूल कितने सुन्दर लग रहे हैं
नदी बहती चली आ रही है
दूर से
इतनी सुन्दर बह रही है नदी
देख रहे हैं कितने सारे आदमी

चित्र: नबीन, मकाला जागृति, बेंगलुरु, कर्नाटका, अगस्त 2019

चित्र: श्रेयांश जैन, सातवीं, जेपीएस स्कूल, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड, जून 2018

पानी

पोलिना मुर्मू
महिला समाख्या सोसायटी
गिरिडीह, झारखण्ड
अप्रैल 2014

बादल से बने पानी
बूँद-बूँद गिरे धरती में पानी
समुद्र में लहराए पानी
तालाब भरे पानी से
घास उगे पानी से
चारों तरफ हो हरियाली
बादल से बने पानी

फुर्र-फुर्र

अक्षिता
के. जी. 1, पोर्टब्लेयर
अण्डमान और निकोबार द्वीप
फरवरी 2012

गिलहरी चढ़ी
पेड़ के ऊपर
फिर एक
तोता भी आया
फिर एक
कौवा भी आया
दोनों उड़ गए
फुर-फुर-फुर मस्ती से

चित्र: सुहानी श्रीवास्तव, पाँचवीं, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, नवम्बर 2018

चित्र: चिन्मयी भट्टाचार्य, जयपुर, राजस्थान, नवम्बर 2017

लहरों के पार
दूर
मैंने दूर नज़र फैलाई
रेतीले किनारे पर
पत्थर कोयले की तरह चमकते हैं
धूप में गर्मी है
मुझे नहीं एहसास
मुझे तीखे कंकड़ों का भी नहीं एहसास
खड़ी हूँ बस
ज़मीं का विस्तार देखती हूँ

किनारा

शाना
आठ वर्ष, चंडीगढ़, पंजाब
मार्च 2015

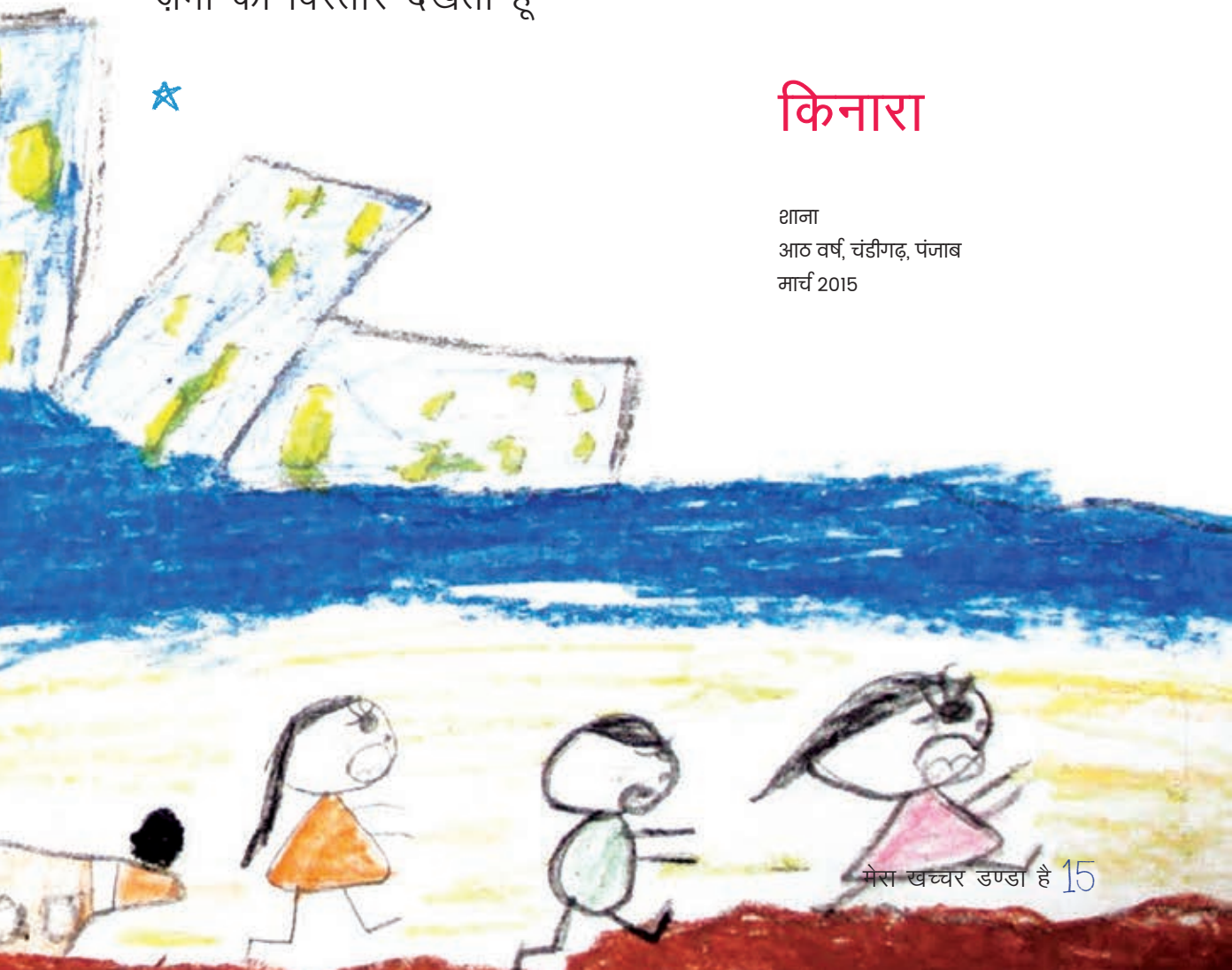

गीत

लीना, गोमती, पायल
हिमांशी व देवकी
अज़ीम प्रेमजी स्कूल
धमतरी, छत्तीसगढ़
मार्च 2015

धान कुटाए, खाए चावल
चावल कुटाए, खाई रोटी
रोटी है भई मोटी-मोटी
रोटी को खाए फिर छोटी
छोटी जब रोटी हो जाए
बहुत खुश छोटी हो जाए
फिर नाचने वो लग जाए
और किसी से रूठ न पाए

चित्र: अमिषा, पाँचवीं, रा.प्रा. विद्यालय, गणेशपुर, उत्तराखण्ड, फरवरी 2018

दृश्य
नाम → आमिषा
कक्षा → 5
श० प्रा० वि० गणेशपुर

चित्र: समीर, गोविन्दगढ़, पीसांगन, राजस्थान, दिसम्बर 2014

ईद

सोहेब खान
तीसरी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
अप्रैल 2011

हम रोज़ रोज़े रखते हैं
ईद पर नमाज़ पढ़ते हैं
और समोसे खाते हैं
दोस्तों को बुलाते हैं
नए-नए कपड़े पहनते हैं
एक-दूसरे के गले मिलते हैं
ईद मुबारक कहते हैं

राजा तू कैसा...?

रणबीर सिंह गुर्जर
तेरह वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान
जून 2011

राजा तेरी
रानी है रोती
देखकर मेरी
नाक में मोती
मोती है मेरा जगमग-जगमग
रानी है तेरी गड़बड़-गड़बड़
राजा तू
कैसा भिखमंगा
छीन लिया
मेरा मोती चंगा

चित्र: माहिल, सात वर्ष
चेन्नई, तमिलनाडु
फरवरी-मार्च 2017

चित्र: प्रेम गोखे, दूसरी, ज़िला परिषद स्कूल
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र, मार्च 2019

चित्र: रिया, उड़ान लर्निंग सेंटर, कान्दबरी, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, अप्रैल 2018

चित्र: बलराम, अक्टूबर 2008

स्कूल

आशीष कुमार
सातवीं, परिवर्तन सेंटर
सिवान, बिहार
जुलाई 2014

सरजी ने एक बन्दर को
बुलवाया स्कूल
सरजी ने सवाल पूछा
बन्दर गया भूल
सरजी को आया गुस्सा
मार दिया एक रूल
बन्दर को भी गुस्सा आया
तोड़ दिया हर रूल
इसी बात पर सरजी ने
दिया बन्दर को एक फूल
बन्दर को हुआ पछतावा
कि की है उसने भूल
अब गलती नहीं करेगा
रोज़ आएगा स्कूल

चित्र: निकुंज गुप्ता, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, दिसम्बर 2015

चित्र: रिशी देसाई, पहली, उज्जैन, मध्य प्रदेश, जनवरी 2008

चित्र: नीलेश, सातवीं, हबीबिया स्कूल
भोपाल, मध्य प्रदेश, जून 2015

भट्टा

अजय कुमार
पाँचवीं, अपना स्कूल, कानपुर
उत्तर प्रदेश
जुलाई 2014

गोल-गोल ये भट्टा कैसा
कमा रहे हैं बाबू पैसा
काम करे है बच्चा-बच्चा
फिर भी खाए आलू कच्चा
मुझे बता दो इसका हाल
बाबू नहीं रखते मज़दूरों का खयाल
भट्टा है यह धोखे जैसा
काम हम करें, बाबू कमाए पैसा
अपने हाथों से ईंटें हम ही बनाते
फिर भट्टे के अन्दर हम ही पकाते
मज़दूर भाई काम करे हैं सारा
बाबू पैसा मारे हमारा
यह भट्टा है कैसा
जब चले तो लगता घड़ी जैसा

चित्र: चन्द्रिका, सातवीं, धारावी आर्ट रूम, मुम्बई, महाराष्ट्र, जुलाई 2015

चित्र: शिवानी लालगे, छठवीं, मुम्बई, महाराष्ट्र, अगस्त 2018

रंगों की सौगात

खुशींदा
दिगन्तर, जयपुर, राजस्थान
मई 2013

फूलों जैसे महक रहे हैं
तारों जैसे दमक रहे हैं
रंग हैं या हीरे-मोती
देखो, कैसे चमक रहे हैं
सहेलियाँ आईं, मिठाई लाईं
साथ में रंगों की सौगात लाईं
होली ने क्या धूम मचाई
लाल-पीली गुलाल लगाई
रंग भरी पिचकारी लाई
हमने खूब धमाचौकड़ी मचाई

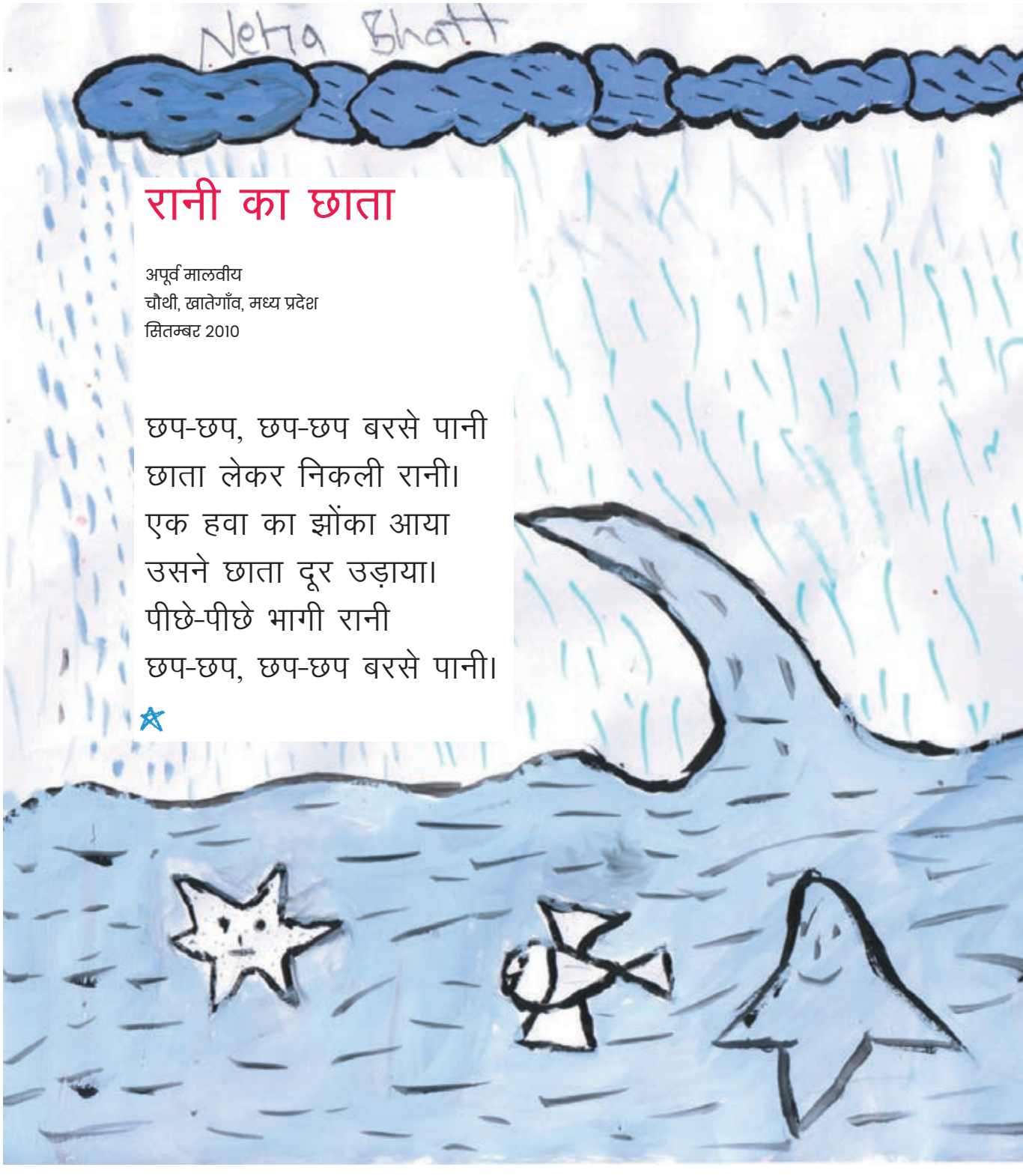

रानी का छाता

अपूर्व मालवीय
चौथी, खातेगाँव, मध्य प्रदेश
सितम्बर 2010

छप-छप, छप-छप बरसे पानी
छाता लेकर निकली रानी।
एक हवा का झोंका आया
उसने छाता दूर उड़ाया।
पीछे-पीछे भागी रानी
छप-छप, छप-छप बरसे पानी।

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई

अवनीन्द्र कुमार राय
कोलकाता, पश्चिम बंगाल
अगस्त 2009

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई
हवा पकड़कर सर-सर लाई
छाता लेकर हम सब बच्चे।
एक बच्चे ने छाता छोड़ा
तो सबने छाता छोड़ दिया
भीगने लगे सब बच्चे
और मौज बनाने लगे बच्चे

चित्र: नेहा भट्ट, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश
सितम्बर 2014

बात है बहुत पुरानी

अशोक कुमार
छठवीं, कानपुर, उत्तर प्रदेश
जून 2009

बात है बहुत पुरानी
सुन लोगे तो आ जाएगा मुँह में पानी।
पेड़ों पर आम लगे थे
हम उसके नीचे खड़े थे
इतने में हवा का झोंका आया
आम तुरन्त नीचे आया
झट-से मैंने उसे उठाया
मेरे मुँह में पानी आया
धोकर उसे मैंने खाया
खाने में बड़ा मज़ा आया।

चित्र: अलफाज़ फारूक काझी, दूसरी, ज़िला परिषद प्राइमरी स्कूल, नाझरा, सोलापुर, महाराष्ट्र, जुलाई 2019

चित्र: संस्कृति ननावरे, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र, दिसम्बर 2018

मछली रानी

आनन्द गुप्ता
पहली, मजना
टीकमगढ़, मध्य प्रदेश
जुलाई 2010

मछली रानी, मछली रानी
क्यों पीतीं तुम ठण्डा पानी
सर्दी लग जाएगी तुमको
डॉक्टर अंकल आएँगे
मोटी सुई लगाएँगे
अब नहीं रोना मछली रानी
अब नहीं पीना ठण्डा पानी

मन में भय

पंकज कुमार झा
नौवीं, टीला जमालपुरा
भोपाल, मध्य प्रदेश
फरवरी 1993

दंगे-फसाद हुए, मारकाट हुई
दंगे में कर्फ्यू के दौरान
कर्फ्यू में मिली ढील
माँ बेटे से बोली,
बेटा, दाढ़ी कटवा लो
तुम्हें कोई मुसलमान
समझकर मार डालेगा
बहन बोली, नहीं भैया
दाढ़ी मत कटवाना, तुम्हें
कोई हिन्दू समझकर मार डालेगा
बाप अपने छोटे बेटे से बोला
बेटा, स्कूल मत जाना
तुम्हें कुछ भी हो सकता है
स्कूल जाते हैं
जाते-जाते मन में भय भरा रहता है
कहीं कुछ गड़बड़ ना हो जाए
कहीं कोई झगड़ा ना हो जाए

चित्र: मेहा पाठक शर्मा, चौथी, जयपुर, राजस्थान, जनवरी 2016

नीम का पेड़

भूमिका
छठवीं, नई दिल्ली
सितम्बर-नवम्बर 2011

चढ़कर बीस सीढ़ियाँ
आया मैं ऊपर
खुली थीं खिड़कियाँ
हवा आ रही थी फर-फर
झाँका जब बाहर
दिखा एक लहराता पेड़

सुन्दर था
स्वस्थ था
चिड़ियों का घर था
चहकती थी चिड़िया
फुदकती थी चिड़िया
गाती थी चिड़िया
बहुत खुश था
वो नीम का पेड़।

आया पतझड़
उड़ गए पत्ते
रह गईं डालियाँ
नहीं रही छाया
नहीं रही शीतलता
पर.....
तब भी चहकती थी चिड़िया
गाती थी चिड़िया
और पेड़ खुश था

चित्र: देव, किंडरगार्टन, इधा फाउण्डेशन, गुरूग्राम, हरयाणा, मार्च 2018

आखिर क्यों

आरती
पाँचवीं, धामीखेड़ा
कानपुर, उत्तर प्रदेश
मई 2010

मैं एक दिन बाज़ार गया
वहाँ एक आदमी ने मुझे मारा
फिर मैं गोल-गप्पे की दुकान गया
वह भी मुझको मारने लगा
फिर एक दिन मैं समोसे की दुकान गया
वहाँ उसने भी मुझे मारा
फिर मैं एक घर में गया
वहाँ उसने भी मुझे मारा
आखिर लोग मुझे मारते क्यों हैं
क्योंकि मैं एक कुत्ता हूँ

चित्र: सन्दीप भार्गव, छठवीं, देवास, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2016

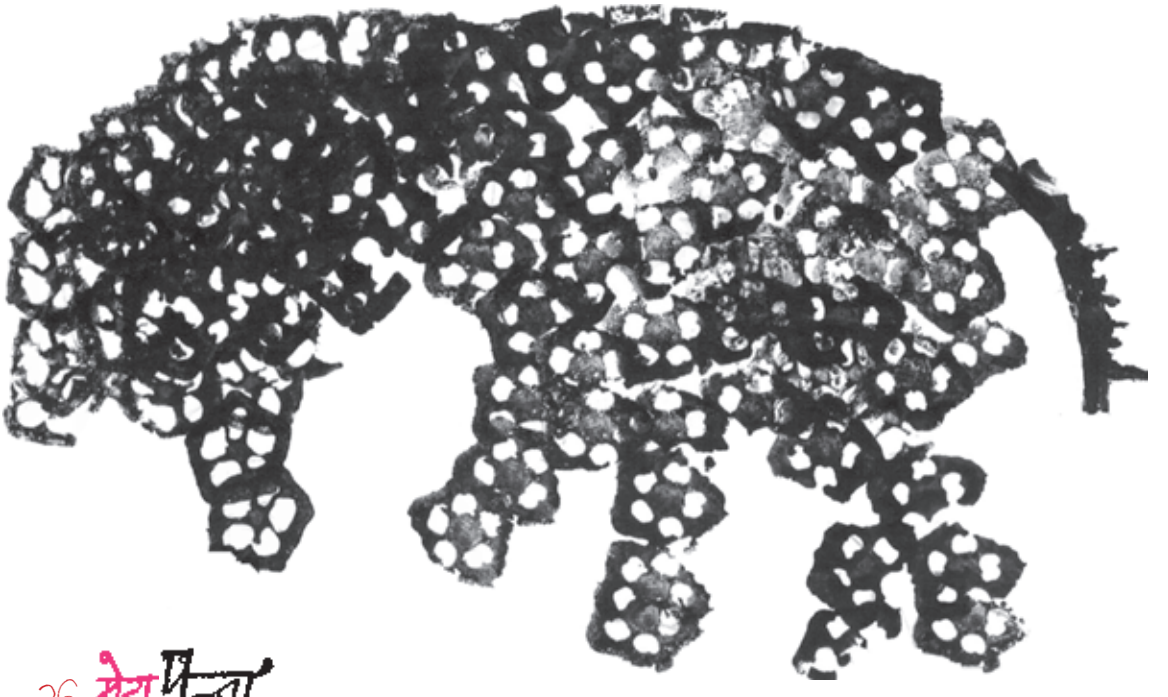

आज सुबह की ठण्डी है

लव कुश
सातवीं, अपना घर
कानपुर, उत्तर प्रदेश
नवम्बर 2010

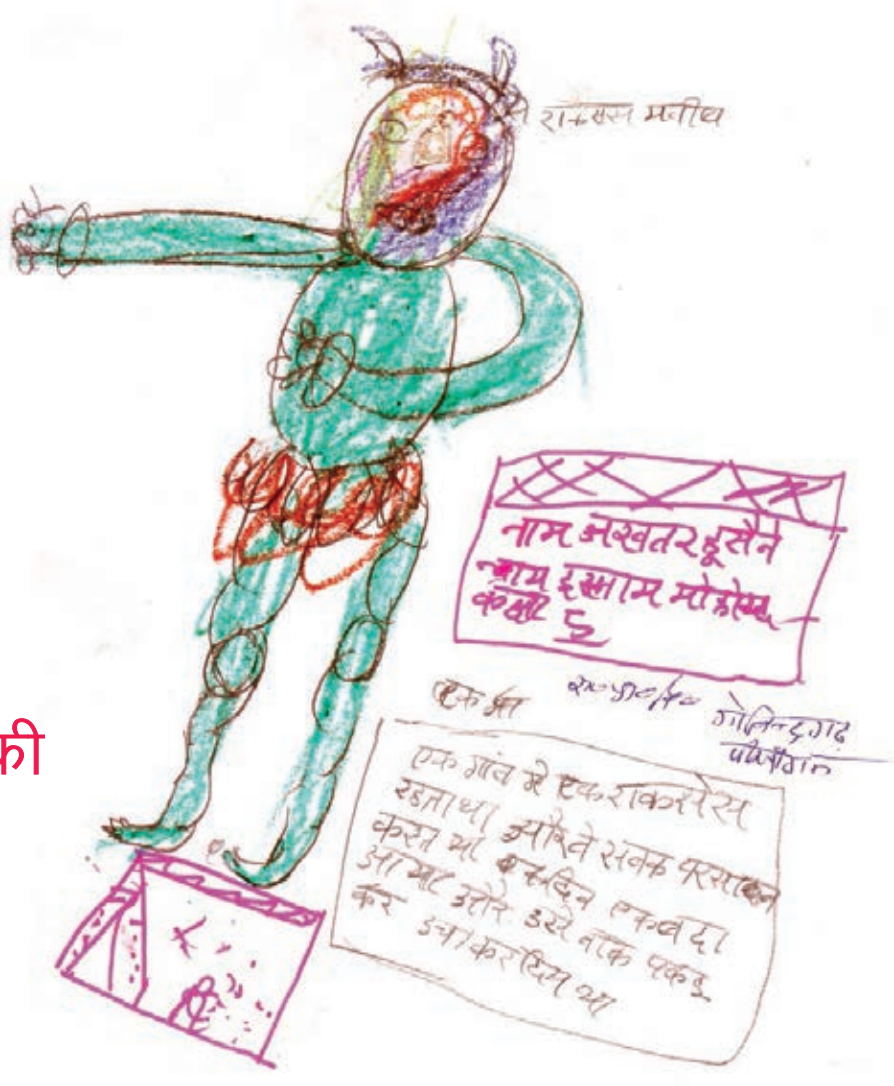

चित्र: अख्तर हुसैन, पाँचवीं, पीसांगन, राजस्थान, मई 2019

आज सुबह की ठण्डी है
बाहर जाकर देखा तो कितनी अच्छी है
कोहरा छाया है, ओस गिर रही है
जो-जो भी गाड़ी चलाते हैं
उनकी टोपी, जूता-दस्ताने ठण्डे हो जाते हैं
आज सुबह की ठण्डी है

खत्म

शामली
बारह वर्ष
कान्दबरी, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
फरवरी-मार्च 2016

सूरज ढल गया
बच्चे थक गए
सब अलविदा करते हैं
और घर चले जाते हैं
लम्बा दिन रहा है
बहुत कुछ हुआ है
खेल खेले गए हैं
जीते गए हैं
कहानियाँ पढ़ी गई हैं
सुनाई गई हैं
लेकिन अब दिन खत्म
उजाला खत्म
इस दिन को कोई याद नहीं रखेगा
यह मामूली दिन था
पर मैंने इस दिन को लिख दिया
अपनी इस छोटी कविता में
मैंने इस दिन की याद बना दी है

चित्र: जीवन, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलुरु, कर्नाटका, मई 2019

चित्र: तुका, पहली, अगस्त 2009

खिड़की से बाहर

सिद्धार्थ
टीका गमरू, धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश
फरवरी-मार्च 2017

जब झाँकता हूँ मैं खिड़की से बाहर
सुबह के छह बजे
दिखाई देती हैं
ढेर सारी चिड़ियाँ

मुझे हर बार लगता है यूँ
सुना रही हैं वो एक-दूसरे को कविता ज्यों

मैं भी कविता सुनाने को होता हूँ तत्पर
जिसे लिखा था पिछली दोपहर

अपनी खिड़की से बाहर झाँकने के बाद
मैं शान्ति से करता हूँ दोपहर का इन्तज़ार

चित्र: आमिर, चौथी, खो नागोरिया, जयपुर, राजस्थान, सितम्बर 2008

मेरी बस का नम्बर

नाम, पता नहीं लिखा
नवम्बर 2010

मेरी बस का नम्बर 11
हॉर्न देकर मुझे पुकारा
समय पर है आती-जाती
कभी ना हम को देर कराती

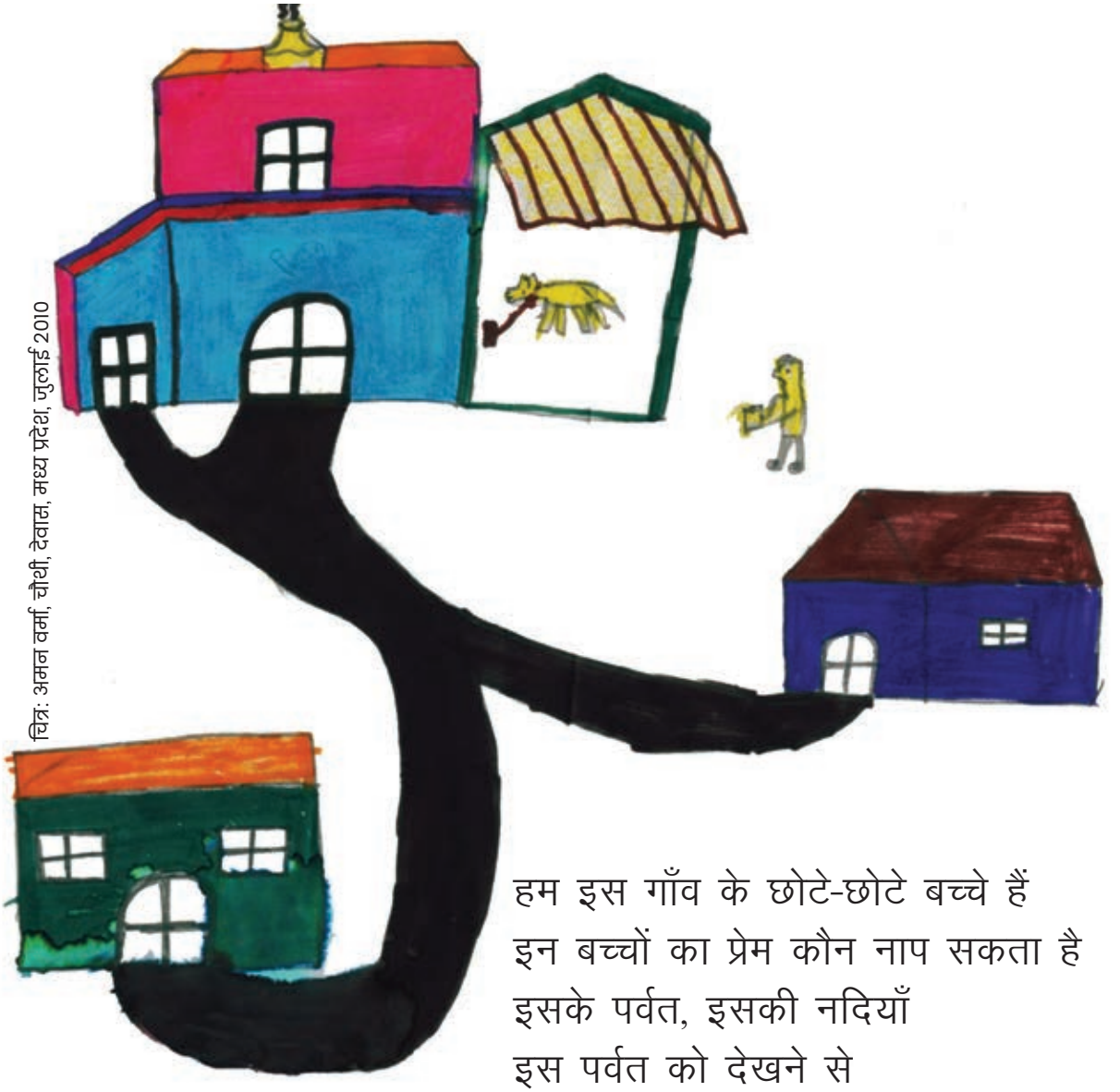

चित्र: अमन वर्मा, चौथी, देवास, मध्य प्रदेश, जुलाई 2010

गाँव के बच्चे

सौगत कुमार राउत
छठवीं, भुवनेश्वर, उड़ीसा
सितम्बर 2015

हम इस गाँव के छोटे-छोटे बच्चे हैं
इन बच्चों का प्रेम कौन नाप सकता है
इसके पर्वत, इसकी नदियाँ
इस पर्वत को देखने से
मुझे माँ दिखाई देती है
जैसे वो मुझे अपनी
गोद में ले रही है
उसके लिए कोई
ना अपना है, ना पराया
इस गाँव की स्मृतियाँ
मेरे मन में रहेंगी सदा

चित्र: माहिल, चेन्नई, तमिलनाडु

जब बच्चों ने देखा चूहा

जब बच्चों ने देखा चूहा
चूहा भागा अपने बिल में
बिल्ली ने भी देखा चूहा
चूहे ने भी देखी बिल्ली
बिल्ली भागी उसके पीछे
डर के चूहा भागा बिल में
बच्चे दौड़े बिल्ली के पीछे
बिल्ली भागी अपने घर में
जब बच्चों ने देखा चूहा
चूहा भागा अपने बिल में

ज्ञान
पाँचवीं, कानपुर, उत्तर प्रदेश
मई 2009

मेरा सपना

पूजा केड़िया
पाँचवीं, दिल्ली
नवम्बर 2013

छत पर बैठी
ताक रही आसमान में
बनते-बिगड़ते बादलों
को देख रही असमंजस में

कुछ सफेद, कुछ लगें सलेटी
कुछ काले, कुछ गोरे बादल
कितना अच्छा हो यदि मैं बादल बन जाऊँ
नीले-से नभ में मैं भी इधर-उधर मँडराऊँ

जब भी देखूँ सूखी धरती
झूम-झूम जल बरसाऊँ
गर्मी से तंग लोगों को
ठण्डक मैं पहुँचाऊँ

सूरज से तो कभी चाँद से
खेलूँ आँख मिचौली
सतरंगी इन्द्रधुनष से
भर दूँ सबकी झोली

चित्र: सपना, तीसरी, हिमाचल प्रदेश, जून 2012

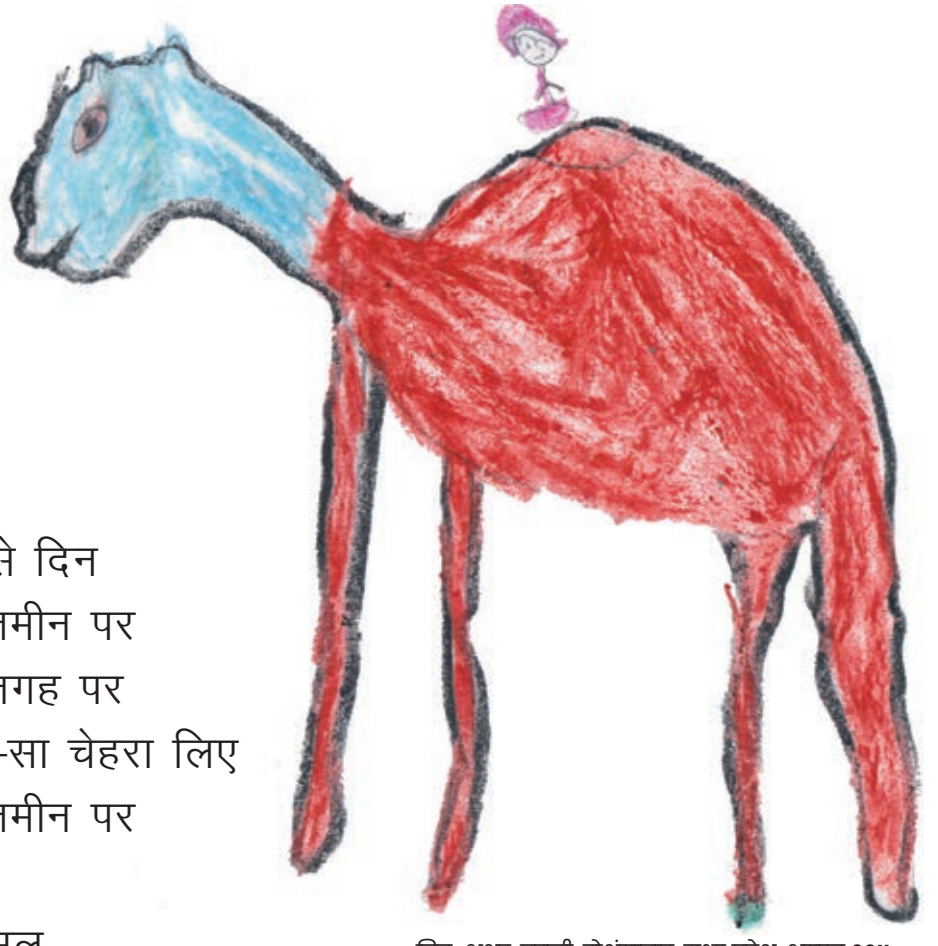

चित्र: अक्षर, पहली, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश, अगस्त 2011

मौत को बुलावा

शिवानी
पता नहीं लिखा
मई 2009

एक प्यारे-से दिन
सूखी-सी ज़मीन पर
खुली-सी जगह पर
एक मासूम-सा चेहरा लिए
सूखी-सी ज़मीन पर
उड़ती धूल
सूखती फसल
और सुबकते लोग
प्रार्थना करते
विनती करते लोग
हमें बारिश दो
हमें बारिश दो
भूख से उड़ते और
गुस्से से मरते पंछी
सूखी ज़मीन पर
और आकाश में एक भी बादल नहीं

मैं भूला

यश तिवारी
चौथी, कानपुर उत्तर प्रदेश
जुलाई 2010

जब मैं भूला
अपनी किताब
क्या फिकर
मैं उसे साझा कर लूँगा

एक दिन भूल जाता हूँ
अपना बस्ता
तो क्या हुआ
मैं बाहर खड़ा हो जाऊँगा
क्या फिकर
मेरे पास दो पैर तो हैं
खड़े होने के लिए

अगर कभी पैसे भूल जाऊँ तो
चीज़ें नहीं खरीद पाऊँगा
क्या फिकर
अगर बल्ला भूल जाऊँ
उस दिन नहीं खेलूँगा
क्या फिकर

पर, यदि मैं भूल गया
कभी अपनी खुशी,
तो क्या हो?
कोई जवाब नहीं है!

चित्र: अनुष्का, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

बूँदों की कहानी

वेदान्त चाटे
छठवीं, नागपुर, महाराष्ट्र
अगस्त 2013

पहली बूँद जब ज़मीन को चूमती है
ज़मीन में एक ठण्डक आ जाती है
मेंढक टर्राते हुए कीचड़ पर आते हैं
धीरे-धीरे बारिश शुरू हो जाती है

बादल गरजने लगते हैं
बिजली कड़कने लगती है
नदियाँ-नहरें उफनने लगती हैं, जैसे
पतीले से उबलता हुआ दूध

बच्चे बारिश में खेलना शुरू करते हैं, जैसे
ज़िद्दी मेंढक को बाहर जाने की छूट मिली हो ऐसे
यही वो समय जब धरती की गुल्लक भरती है
वही गर्मियों में खनखनाते चिल्लर-सी

न पैरों में चप्पल, न कंघी किए हुए बाल
न ही सर पर छाता
न ही बरसाती
बस बूँदों की है भागाभागी

घोंघें छेदों में से निकले
धीरे-धीरे कदम बढ़ाकर
अपनी मंज़िल के रास्ते
दिन-रात ये चलते जाते

रस्ते-रस्ते पर छातों की भीड़
बचाती हुई आदमियों के सर
कुछ काली, कुछ पीली, कुछ हरी, कुछ गुलाबी
छातों की है बढ़ गई आबादी

चित्र: आशु काकड़े, चौथी, आनन्द निकेतन स्कूल सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र, अगस्त 2015

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा

शाना
आठ वर्ष, चंडीगढ़, पंजाब
अगस्त 1999

चंडीगढ़ में बम नहीं गिरेगा
जंग तो कारगिल में चल रही है ना
अगर चंडीगढ़ में गिरे तो भी
सैनिक अड्डों पर ही गिरेगा
वो तो चंडी मन्दिर और सेक्टर में हैं
मैं ज़िन्दा रहूँगी
वैसे चंडीगढ़ पाकिस्तान में होता
तो क्या हो जाता
लोगों का सुखी रहना ज़रूरी है
मैं मरना नहीं चाहती
दुनिया के उन इलाकों में
जहाँ जंग नहीं है
बच्चे बड़े होंगे
मेरे यहाँ बम गिरेगा
तो मैं मर जाऊँगी
मैं मरना नहीं चाहती

चित्र: आशना ए बल्लभ, बाल भवन बड़ौदा, गुजरात, दिसम्बर 2016

मेरे बाबा

अर्जिता
छठवीं, जे.बी. एकेडमी
फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश
नवम्बर 2009

मेरे बाबा, मेरे बाबा
करते रहते शोर-शराबा
रैन-दिवस भरते खर्राटे,
जगने पर वे सबको डाँटें
दादी अम्मा से हैं डरते
उनके आगे पानी भरते
हम सब दिन भर यही मनाएँ
ईश्वर उनकी उम्र बढ़ाएँ

चित्र: सार्थक नायर, आठवीं, सेंट जोसेफ को-एड स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश, जुलाई 2018

साइकिल

पूजा वर्मा
नौवीं, विंध्यवासिनी हायर सैकेंडरी स्कूल
मालाखेड़ी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
दिसम्बर 2017

कितना मज़ा आता होगा,
साइकिल जब वो चलाता होगा।
ट्रिन-ट्रिन घण्टी बजाता होगा,
हवा से तेज़ भागता होगा
कभी भी, कहीं भी चला जाता होगा।

पल में पहुँच जाता होगा,
मुझे कभी ये ख्याल आता है
चलाना कैसे सीखा जाता है।
अगर मेरे को भी चलानी आती साइकिल
मैं भी झट-से पहुँच जाती स्कूल

ट्रिन-ट्रिन मैं भी घण्टी बजाती
हवा के साथ-साथ मैं लहराती
कितना मज़ा आता होगा,
साइकिल जब वो चलाता होगा।

चित्र: ओसामा खुर्शीद, आठवीं, नई दिल्ली, अक्टूबर 2008

चित्र: नियति सोनी, पाँचवीं, सरदाना इंटरनेशनल स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश, अगस्त 2018

गणित

अर्जिता
छठवीं, जे बी एकेडमी
फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश
नवम्बर 2009

यह गणित बड़ा दुखदाई है
बहुतों की आफत आई है
स्कूल से जब घर जाती हूँ
दस-बीस सवाल लगाती हूँ
जब ब्लैकबोर्ड पर जाती हूँ
तब इधर-उधर चकराती हूँ
मानो दिमाग में काई है
यह गणित बड़ा दुखदाई है

आसमान में चिड़िया

खुशी
आठवीं, सवाई माधोपुर, राजस्थान
नवम्बर 2013

आसमान में चिड़िया हैं
कई तरह की चिड़िया हैं
कोई नीली, कोई पीली
रंग-बिरंगी चिड़िया हैं
मीठे-मीठे बोल सुनाती
सुन्दर-सुन्दर चिड़िया हैं
पेड़ों की डाली पर आतीं
चूं-चूं, चीं-चीं चिड़िया हैं

चित्र: राजेन्द्र गुर्जर, सवाई माधोपुर, राजस्थान, जुलाई 2012

चित्र: रोशनी व्याम, नौवीं, भोपाल मध्य प्रदेश, जनवरी 2010

छत्तीसगढ़ी कविता

प्रस्तुति: सुकन्या तिवारी
आठ वर्ष, हरदा, मध्य प्रदेश
सितम्बर 2012

अटकन बटकन दही चटाका
लउआ लाटा बनके काँटा।
लुहूर लुहूर पानी आइन
सावन में करेला फुले
चर-चर बहिनी गंगा गाइन
गंगा ले गोदावरी
पाक-पाक आम खाईन
आम के डोरा टूटगे
राजा का टूरा रूठगे

चित्र: पंकज चौरे, सातवीं, सिलपटी, बैतूल, मध्य प्रदेश, फरवरी 2012

चित्र: शिवी देवी, सातवीं, हीरानगर, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, फरवरी 2012

डॉक्टर दादी

संगीता पदराम
सातवीं, मुड़ा पार
होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
अगस्त 2012

दादी मेरी बड़ी निराली
हरदम करतीं मेरी रखवाली
सुबह-शाम वह जपतीं राम
और खेत पर करतीं काम
रोज़ यह, वह मुझसे कहतीं
काश मैं तेरे जैसी होती
फिर मैं भी शाला को जाती
पढ़-लिखकर डॉक्टर बन जाती
मरीजों की मैं सेवा करती
उन्हीं में ईश्वर देखा करती

चित्र: मगनलाल जोड, पाँचवीं, सिरोही, राजस्थान, दिसम्बर 2013

कौन जानवर?

भरत लाल गुर्जर
चौदह वर्ष, सवाई माधोपुर, राजस्थान
मई 2012

कान हैं इसके कुत्ते जैसे
पूँछ है इसकी चूहे जैसी
डीलडौल है हाथी जैसा
मुँह फाड़े बिल्ली के जैसा
पैर शेर जैसे भारी हैं

नाक गाय जैसी कारी है
देख रहा खरगोश आँख पर
परेशान है झाँक-झाँककर
अन्धकार-सा मौन जानवर
आखिर है यह कौन जानवर

चित्र: स्मित कबीर, सात वर्ष, मुम्बई, महाराष्ट्र, जून-जुलाई 2017

चित्र: अजय मैनी, दस वर्ष, राजस्थान, सितम्बर-नवम्बर 2011

चित्र: जोहर ठाकुर, पाँचवीं, सांगाखेड़ा, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश, मई 2018

चित्र: शिवरंजनीपुरी, चौदह वर्ष, दिल्ली, जनवरी 2012

बिल्ली रानी

दबे-दबे पाँव से आती
घात लगाकर चूहे खाती
खुद कुत्ते से डरती है
पर, चूहों पर मरती है
चूहे हैं उससे परेशान
कौन बचाए उनकी जान
पीकर दूध करे शैतानी
कैसी नटखट बिल्ली रानी

रितुपाल चौहान
पाँचवीं, फलौदी, जोधपुर
राजस्थान, जनवरी 2014

इधर मत खसको

लक्ष्मी यादव
अगस्त 2009

इधर मत खसको
उधर मत खसको
लगाए एक धक्का
दब गया बख्खा

ऐसी चली बस हमारी
लेकर गई 100 के ऊपर सवारी
दिन भर में बस यही एक बारी
जाना हो भौंरा या डढारी

टिकट के पैसे पड़ते हैं
ज़रा भारी
क्या करें यह है
हमारी लाचारी

चित्र: मोना, आठवीं, इन्दौर, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2009

मेरा खच्चर डण्डा है

यशवीर सिंह
सातवीं, राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय
डेरकापुरोला, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड
अप्रैल 2014

चित्र: सुषमा अहिरवार, आठवीं, गड़ाघाट, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2010

मेरा खच्चर डण्डा है
फिर भी वह गुण्डा है
दिन भर करता रहता मस्ती
शाम को घर आ जाता जल्दी
फिर अगले दिन जाता खेतों में
लट्ठ खाकर आता है
सबकी मार खाता है
दिन को पत्थर डालता है
रात को खूब थक जाता है
चना-गुड़ खूब खाता है

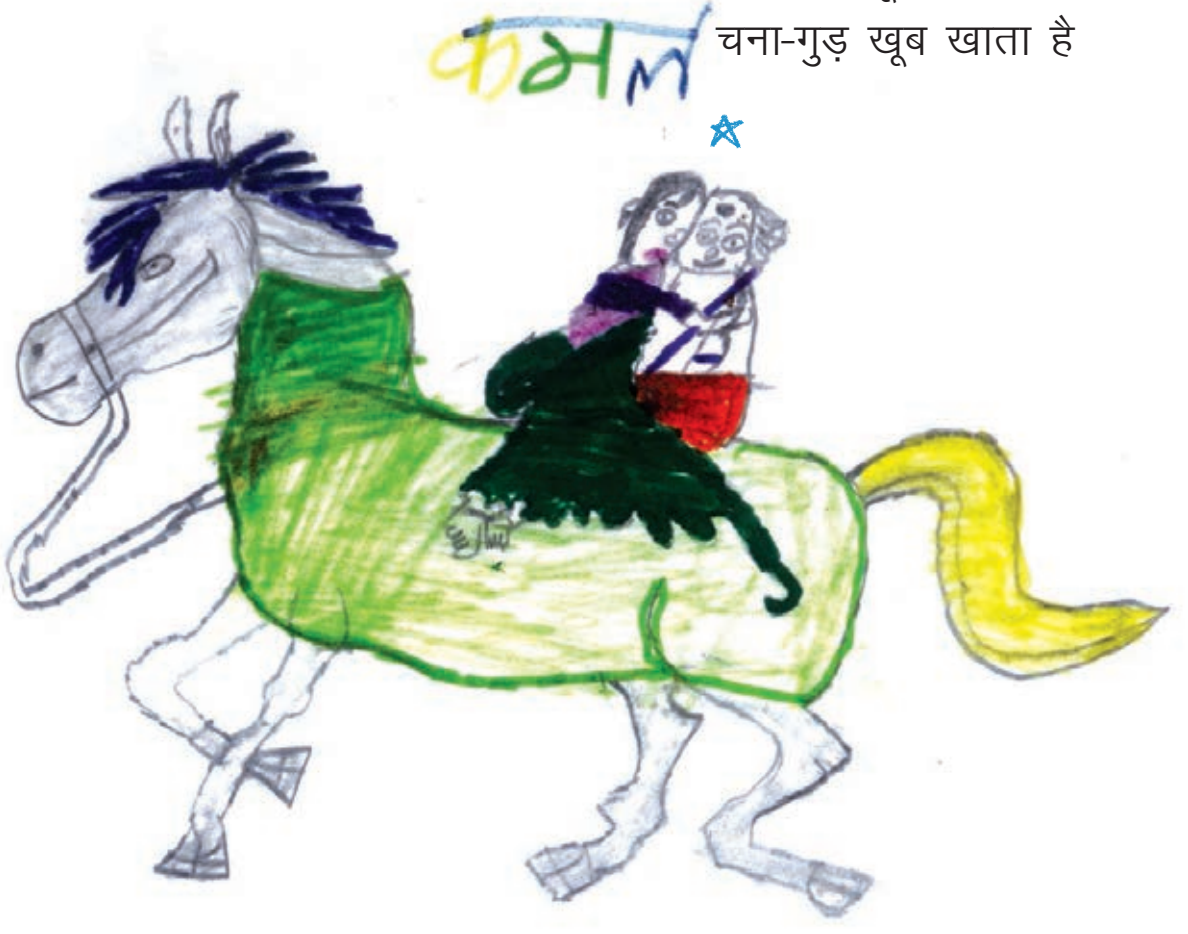

चित्र: कमल, मार्च 2009

राजा का सोफा

प्रमोद यादव
होशंगाबाद, मध्य प्रदेश
जून 2009

राजा के सोफे पर
बैठे तीन बन्दर,
कर रहे थे टीवी चालू
देख रहे थे हाथी-भालू।

चित्र: नीलूपमा, छठवीं, दीपालया स्कूल, ओखला, दिल्ली, जनवरी 2010

चाऊमीन दुकान
मेरा स्कूल
शौचालय
office
Building
Park

दादा, दाल बाटी दे

सलमा
दस वर्ष, जयपुर, राजस्थान
सितम्बर-नवम्बर 2011

दादा, दाल-बाटी दे
बेटा सुबह होने दे
सुबह कब होएगी?
जब सूरज दादा आएँगे।
सूरज दादा कब आएँगे?
जब मुर्गा भैया बोलेगा
मुर्गा कैसे बोलेगा?
कुक्डूं-कूं, कुक्डूं-कूं

चित्र: टुटु, दूसरी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश, नवम्बर 2013

चित्र: दमयन्ती, पहली, वर्धा, महाराष्ट्र, जुलाई 2010

BORED
ZAP!
meh,
catch me,

तस्वीर

सौम्या
चौथी, भोपाल, मध्य प्रदेश
मई 1991

एक बच्चा तस्वीर बनाता है
किसी को मालूम है कहाँ पहुँचती है वो
फिर वह उसे फेंक देता है
एक बच्चा उसे उठाता है
रंग भरकर बच्चा उसे फेंक देता है
एक बच्चा उसे फाड़ देता है
एक बच्चा उसे उठाता है
सारे टुकड़े जोड़ता है
कोई जानता है कौन है वो?
नहीं, अगर तुम में से कोई जानता होता
तो तस्वीर लाता, उसे देखकर
तारीफ करता उस बच्चे की
जिसकी वजह से वह तस्वीर तुम्हें
देखने को मिली
चुप नहीं बैठता इस तरह

चित्र: द येलो ट्रेन स्कूल के आठवीं कक्षा के विद्यार्थी, कोयम्बटूर, तमिलनाडु, जनवरी 2019

फर-फर

बीना मीणा
ग्यारह वर्ष, जगनपुरा, राजस्थान
सितम्बर-नवम्बर 2011

पानी बोला झर-झर
मेंढक बोला टर-टर
सर्दी आई, लाई
धूप गुलाबी भर-भर
पेड़ से हरे रंगीले
मार्च ने कर दिए पीले
पतझड़ आया फर-फर
पत्ते बोले खर-खर

चित्र: अनाम, अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र, दिसम्बर 2019

मैं कैसा बच्चा हूँ?

बिट्टू
दस वर्ष, भोपाल, मध्य प्रदेश
मार्च 2008

मैं खेलता हूँ
अपने सपने के दोस्त के साथ
मज़ाक करता हूँ
मैं बच्चों को मारता हूँ
मैं किसी से नहीं डरता हूँ
मैं पेड़ पर झूलता हूँ
मैं गन्दा बच्चा हूँ

मैं कहानी बनाता हूँ
मैं पेड़ उगाता हूँ
मैं मस्ती करता हूँ
मैं बाज़ार नहीं जाता
मैं माँ से कितनी बार कहता हूँ
साइकिल लाने को
पर वह नहीं लातीं
मैं रूठा हुआ बच्चा हूँ

मैं गन्दे कपड़े पहनता हूँ
मैं पढ़ता नहीं हूँ
मैं दरवाज़े पर झूलता हूँ
मैं कुत्ते से डरता हूँ
मैं झाड़ू नहीं लगाता

मैं घमण्डी हूँ
मुझे बृजेश डाँटता है
मुझे माँ मारती हैं
मुझे लड़कियाँ चिढ़ाती हैं
मुझे मारना आता है
मुझे मारना नहीं आता है
पर, मुझे छिपना आता है

मैं रेत पर खेलता हूँ
मैं चित्र बनाता हूँ
मैं रोता हूँ
मैं बादल को देखता हूँ
मैं गाना गाता हूँ
गीता पढ़ती है तो मैं देखता हूँ

चित्र: स्नेहा, धारावी आर्ट रूम, मुम्बई, महाराष्ट्र, मार्च 2018

मेरा खच्चर डण्डा है
MERA KHACHCHER DANDA HAI

चकमक में छपी बच्चों की कविताओं व चित्रों का संकलन
डिज़ाइन: कनक शशि
संकलन व सम्पादन: कविता तिवारी, कनक शशि व सजिता नायर
आवरण चित्र: बिन्दु, जोसफ, राहुल और भरत, थांडला, झाबुआ, मध्य प्रदेश, फरवरी 2010

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/ पर उपलब्ध है।

इस किताब की सामग्री का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक के ज़रिए लेखक से अवश्य सम्पर्क करें।

ईडेलगिव फाउंडेशन और पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

संस्करण: जनवरी 2020/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मैपलिथो व 210 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-87926-38-7
मूल्य: ₹ 135.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72-73 www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: भण्डारी प्रिंटर्स, भोपाल; फोन: +91 755 246 3769

यह मजेदार पत्र तथा प्रमाण पत्र प्रतियोगिता में आई रचनाओं से चुने गए हैं

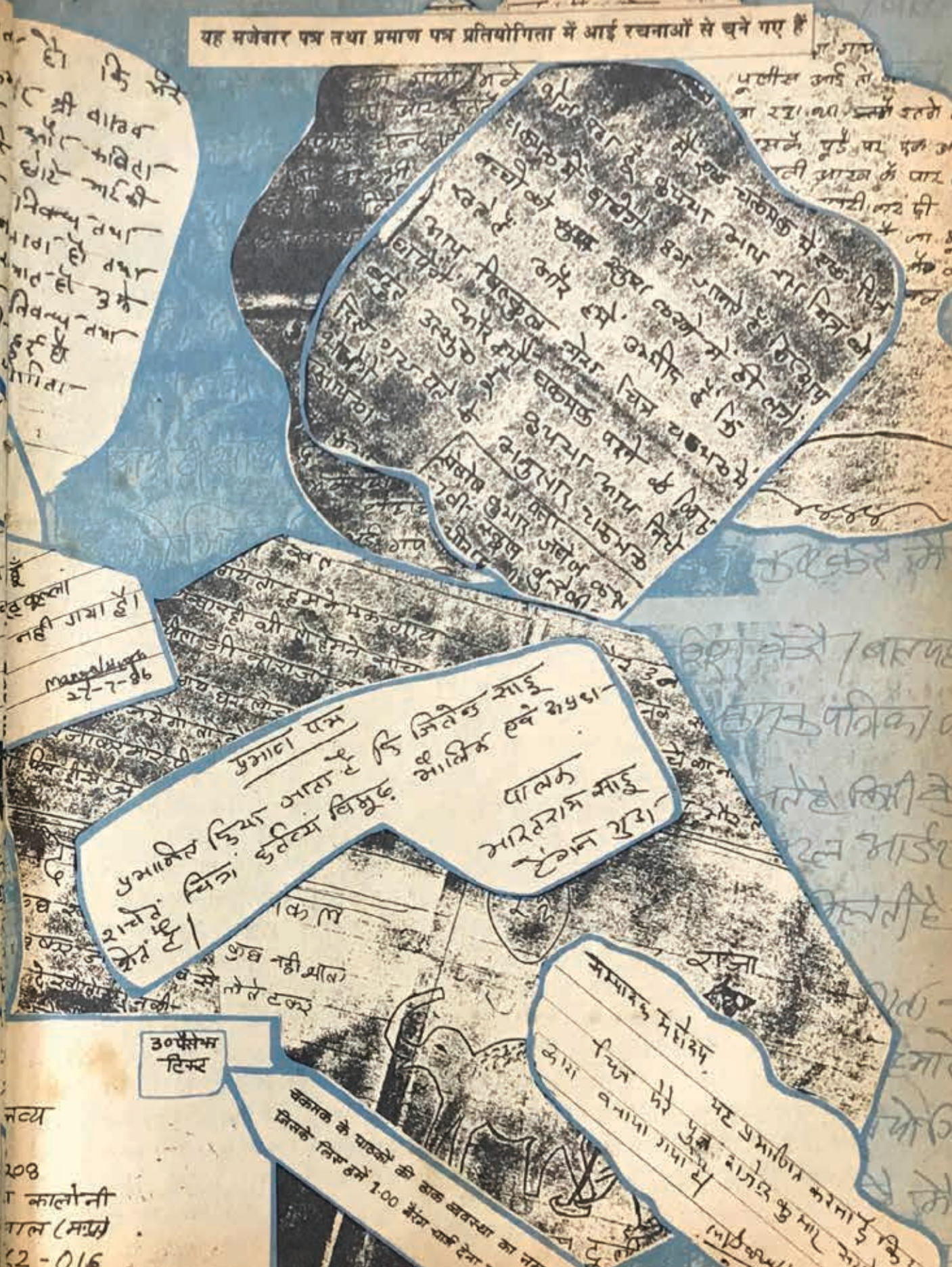

चार से चौदह वर्ष के बच्चों की स्कूल, नदी, चिड़िया, बारिश, दंगों जैसे ज़िन्दगी के विविध पहलुओं पर कविताएँ। लम्बी, छोटी, मीठी, तीखी इन रचनाओं में तुम्हें अनेक रंग व स्वाद का एहसास होगा।

EdelGive Foundation
An Edelweiss Initiative
parag
₹ 135.00
9 789387 926387
एकलव्य